

संत कबीरदास जयंती 2025

चर्चा में क्यों?

प्रधानमंत्री ने संत कबीरदास की **648वीं जयंती** के अवसर पर, जसि **कबीरदास जयंती (कबीर प्रकट दिवस)** के रूप में मनाया जाता है, पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुख्य बटु

- ऐतहिसकि पृषठभूमि:
 - कबीरदास जयंती हर वरष **हदुि पंचांग** के अनुसार ज्येषठ मास की पूरणमि तथिी को मनाई जाती है।
 - कबीरदास 15वीं शताब्दी के कवि, संत तथा **समाज सुधारक** थे, जनिका जनम सन् 1440 में वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में एक हदुि परिवार में हुआ था, लेकनि उनका पालन-पोषण एक मुसलमि बुनकर दंपत्ति द्वारा कयिा गया था।
 - उन्होंने रामानंद और शेख तकी जैसे गुरुओं से आध्यात्मकि मार्गदर्शन प्राप्त कयिा तथा अपने अद्वितीय दर्शन को आकार दयिा।
- दर्शन, कार्य और शकिषाएँ:
 - वे **भक्ति आंदोलन** में एक उल्लेखनीय व्यक्तित्थे, जसिमें ईश्वर के प्रति समर्पण और प्रेम पर वशिष ज़ोर दयिा गया।
 - भक्ति आंदोलन की शुरुआत 7वीं शताब्दी में दक्षिण भारत में हुई थी, जो 14वीं व 15वीं शताब्दी तक उत्तर भारत में फैल गया।
 - उन्होंने कबीर पंथ की स्थापना की, जो एक आध्यात्मकि समुदाय है, जसिके अनुयायी आज भी बड़ी संख्या में वदियमान हैं।
 - उनके प्रमुख साहित्यकि योगदानों में बीजक, सखी ग्रंथ, कबीर ग्रंथावली तथा अनुराग सागर शामिल हैं।
 - उन्होंने अनेक भजन और दोहे लिखिे, जनिमें अंधवशिवास की नदिा की गई तथा सामाजकि सुधार, स्वतंत्र चतिन एवं आध्यात्मकि एकता को बढ़ावा दयिा गया।
 - **बरजभाषा** और **अवधी** बोलचाल में लिखिी गई उनकी कवित्थिाओं ने भारतीय साहित्य और हदुि भाषा के वकिास में महत्त्वपूर्ण योगदान दयिा।
- मृत्यु और प्रतीकात्मक वरिसत:
 - कबीरदास का नदिन सन् 1518 में मगहर (उत्तर प्रदेश) में हुआ, जहाँ उनके अंतमि संस्कार को लेकर हदुिओं और मुसलमानों के बीच वविाद उत्पन्न हुआ।
 - संत कबीर की वरिसत को दोनों समुदायों द्वारा सम्मान दयिा जाता है, वहाँ हदुिओं द्वारा नरिमति समाधि है और मुसलमानों द्वारा नरिमति मज़ार, एक साथ स्थति है।

Bhakti Saints of Medieval India

